P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# कन्नौज में इत्र उद्योगों का माँग में कमी के कारणों का विस्तृत अध्ययन व उसके प्रभाव का विश्लेषण

**धर्मेन्द्र वर्मा**
शोधार्थी,
समाजशास्त्र विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत

**गजानन मिश्रा**
प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
महात्मा गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
करेली, नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश, भारत

**सारांश**

कन्नौज उत्तरप्रदेश में राजधानी लखनऊ से 130 किमी. पर स्थित एक जिला है, जहाँ 16वीं शताब्दी में इत्र बनने की शुरुआत हुई, ऐतिहासिक दृष्टिकोण के रुप में यह सामने आता है कि जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ के लिए, जहाँगीर ने गुलाब के फूलों से अत्यन्त सुगन्धित इत्र बनवाया जो नूरजहाँ को बहुत पसन्द आया। उसी समय से वहाँ इत्र बनाने का व्यवसाय शुरु हुआ। कन्नौज मुख्य रुप से ही इत्र और अतर के लिए अधिकतर जाना जाता है। इसके बावजूद भी यहाँ कोई रिसर्च सेंटर नहीं है। उद्यमियों द्वारा सदियों से चली आ रही यह परम्परा इत्र का व्यवसाय व उसको तैयार किया जाना। विशेष रुप से विदेश की अपेक्षा कन्नौज में ही अतर, इत्र और एसेंशियल आयल तीनों ही तैयार किया जाता है। पुरात्व काल में लोग अधिकतर देवताओं को प्रसन्न करने के लिये व व्यक्तिगत व्यवहार के लिये एवं शव संस्कार के लिये इत्र का प्रयोग काफी मात्रा से करते आ रहे है। कन्नौज इत्र की राजधानी के नाम से प्रसिध्द है। सन् 1990 से ही सुगन्ध एवं सुरस विकास केन्द्र (एफ एफ डी.सी.) जिले में परिचालित है। यह संस्था यूएस आई डी ओ, केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के सहयोग से स्थापित की गयी। यह जिला अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भी अपने तत्व स्वाद और सुगंध के लिए जाना जाता है। इस संस्थान में इत्र से सम्बन्धित सभी आयाम जैसे पौधे प्रसंस्करण जैव प्रौद्योगिकी एवं सुगन्धित पौधे से सम्बन्धित अन्य कार्य किए जाते है।

**मुख्य शब्द :** इत्र के क्षेत्र में व्यवसाय, जटिल सुगंध, इत्र के उत्पादन में उद्मियों एवं श्रमिकों की स्थिति।

**प्रस्तावना**

इत्र व्यवसाय़ पर अन्य परिदृश्यों में शोध के अलावा इसके माँग की कमी होने पर शोध करना एक अत्यन्त प्रासंगिक विषय है। कन्नौज को इत्र की राजधानी का दर्जा प्राप्त है, जो ऐसे ही नहीं है, एक समय पर यहाँ माँग की प्रचुरता थी, जिससे केवल भारत में ही नहीं वरन विश्व के अन्य देशों में भी कन्नौज को इत्र के लिए ही जाना जाता है। ब्रिटेन, अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब ईरान, ईराक, सिंगापुर, फ्रांस, ओमान, कतर आदि देशों में भी इसका आयात किया जाता है। इस पारम्परिक इत्र को भौगोलिक संकेतक भी प्रदान किया गया है। यहाँ इत्र बनाने की कला हजारों वर्ष पुरानी है।[1, 5]

कन्नौज के इत्र बनाने की प्रक्रिया में पीढ़ी दर पीढ़ी नये–नये संशोधन किए जा रहे है। यह इत्र प्राकृतिक संसाधनों जैसे पुष्प, कस्तूरी, कपूर, केसर, सफेद चमेली, मिट्टी आदि से तैयार किया जाता है। चूँकि इस तरह के इत्र बिना एल्कोहल और बिना रसायन के बनाया जाता है, इसलिए एक छोटी सी बोतल को तैयार करने में भी कम से कम 15 दिन का समय लग जाता है। मानसून की पहली सुगन्ध को ध्यान में रखते हुए एक इत्र तैयार किया जाता है, जिसे इत्र ए खाकी या मिट्टी इत्र कहते है। इस तरह के इत्र बनने के बाद भी माँग में कमी का होना चिन्ता का विषय है।[2]

**सुगन्ध व्यवसाय में गिरावट**

कन्नौज में अभी लगभग 4000 लोग इत्र के इस व्यवसाय में लगे है। इनका योगदान की रुपों में हो सकता है जैसे किसानी करने में या लगभग मौजूद 400 कारखानों के श्रमिक के रुप में या दुकानदार के रुप में उनका योगदान लगातार बना हुआ है। कन्नौज के इत्र का उपयोग खाद्य उद्योग, गुटखा, तम्बाकू और पान मसालाओं के निर्माताओं द्वारा प्रयोग किया जाता है। किन्तु वर्तमान समय में लोग रसायनों से निर्मित तीक्ष्ण सुगन्ध वाले इत्र की तरफ आकर्षित हो रहे है, यहीं वजह है कि कन्नौज के इत्र की माँग विश्व बाजार में कम हो रही है। आजकल बाजार में तरह तरह के सुगन्धित व रासायनिक तत्वों

से युक्त इत्र व इत्र जैसे सुगन्धित पदार्थों की भरमार है जो सस्ते दामों में आसानी से उपलब्ध है यद्यपि ग्राहकों की त्वचा व शरीर के नुकसान की चिन्ता पहले नहीं होती है। [3] इन सस्ते उत्पादों में कन्नौज के इत्र बाजार को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

एक आकलन के अनुसार कन्नौज का एक कारखाना प्रत्येक माह लगभग 2000 लीटर इत्र और सुगन्धित तेल तैयार करता है, जिसका 20 फीसदी हिस्सा निर्यात कर दिया जाता है। औद्योगिक के विकास ने भले ही बड़े बड़े शहरों की कार्यप्रणाली या क्षेत्र को बदल दिया है, किन्तु कन्नौज में आज भी हर दूसरे घर में इत्र का उत्पादन किया जा रहा है तथा इन्होंने सदियों से चले आ रहे अपने पारम्परिक व्यवसाय को जीवित रखा है।इस क्षेत्र के अन्तर्गत इत्र का उत्पादन अत्यन्त सरल और सही तरीके से बनाने हेतु विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ आसानी से मिलती भी नहीं है जोकि इस क्षेत्र में अधिक मात्रा में उपलब्ध होती है। मुख्यतः चित्र 1 के माध्यम से इत्र बनाने सम्बन्धी रुपरेखा को प्रस्तुत किया गया है। [4]

**चित्र 1 इत्र बनाने की प्रकिया**

कन्नौज में इत्र उद्योगों द्वारा तैयार इत्र के माँग में कमी के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित है।

1. कन्नौज में बनने वाला 95% इत्र खाद्य उद्योग को बेचा जाता था, परन्तु अब कई राज्यों में गुटखे व पान मसाले पर प्रतिबन्ध ने इत्र उद्योग पर असर डाला है।
2. कच्चे माल की बढ़ती कीमतों ने भी इस उद्योग की कमर तोड़ने में अच्छी खाली भूमिका निभा रही है। उदाहरण के तौर पर चन्दन का तेल जो इसमें प्रमुखता से प्रयोग में लाया जाता है।
3. लोगों की पसन्द और मानसिकता में भी परिवर्तन देखने को मिला है, जहाँ पहले के समय में लोग इत्र का उपयोग खुद के लिए करते थे अब इत्र एक फैशन के रुप में व अपनी इत्र की खुशबू दूसरों तक पहुँचाने में इस्तेमाल हो रहा है।
4. बहुराष्ट्रीय कम्पनिओं द्वारा अपने सुगन्धित उत्पादों के लिए भ्रामक प्रचार प्रसार और सरकार को कर देकर अपने उत्पादों को अधिकतम मात्रा में बाजार में लाने में सक्षम है जबकि सरकार खुद कन्नौज के इत्र व्यवसाय को प्रचारित प्रसारित उस मात्रा में नहीं कर पा रही है, जितनी उसकी आवश्यकता है। [6]
5. हमारी भाग दौड़ भरी जिन्दगी भी कही न कही हमें अपने सांस्कृतिक विरासत से दूर करते जा रही है, जिसके कारण कन्नौज को आज का युवा इत्र की राजधानी के तौर पर नहीं बल्कि एक जिले के रुप में जानता है। जबकि इत्र हमारी एक ऐतिहासिक विरासत रही है, जिसे हम संजों कर रख पाने में असफल साबित होते जा रहे है। [7]

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. कन्नौज के इत्र के माँग में कमी के कारणों का व्याख्या एवं उल्लेख करना।
2. इत्र के माँग में कमी के कारणों को दूर करना एवं इत्र उद्योग को बढ़ावा देने के प्रयासों में सुधार लाना।
3. विशेष रुप से कन्नौज को इत्र की राजधानी के रुप में ब्राण्डिग करना व प्रचार प्रसार करना।

**शोध प्रविधियाँ**

प्रस्तुत शोध पत्र में इत्र उद्योग की वर्तमान स्थिति व उसके लिए किए गये न्यायपूर्ण कार्य व सरकार की योजनाओं का उल्लेख किया गया है। शोध पत्र को प्राप्त करने का माध्यम समाचार पत्र, इण्टरनेट व अन्य वेबसाइच के माध्यम से पूर्ण जानकारी प्राप्त की गयी है। कन्नौज इत्र उद्योग को बढ़ावा देने के लिए पिछले साल

2018 में सरकार से कुछ नयी योजनाओं को मंजूरी दी है। "कन्नौज का इत्र विदेशों में महकेगा, बनेगा परफ्यूम पार्क" गाँव कनेक्शन के रिपोर्ट के मुताबिक कन्नौज में इत्र पार्क बनाने की योजना लागू की गयी है। इस प्रोजेक्ट के तहत सरकार इत्र उद्योग के विकास के लिए तकनीकी के इस्तेमाल और इनोवेशन को बढ़ावा देगी। इसका मकसद इत्र उद्योग को बढ़ावा देना व रोजगार सृजित करना है और नये बाजार खोजना है।

कन्नौज में सुगन्ध और सुरस विकास केन्द्र की स्थापना वर्ष 1991 में यू.एन.आई.डी.ओ. की स्थापना भारत सरकार व उत्तरप्रदेश के सहयोग हुई थी। सुगन्ध व सुरस विकास केन्द्र (एफ.एफ.डी.ओ.) का उद्देश्य कृषि प्रौद्योगिकी और रासायनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आवश्यक तेल सुगन्ध और स्वाद उद्योग व आर एवं डी. संस्थानों के बीच एक सत्र के रुप में कार्य करना है। सुगन्धित खेती व इसके प्रसंस्करण में लगे किसानों व उद्योगों की स्थिति ठीक बनाए रखना व उनकी सहायता करना केन्द्र का मुख्य उद्देश्य है ताकि उन्हें स्थानीय व वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मक बनाया जा सके।

**कारणों का प्रमुख विश्लेषण**

इत्र उद्योगों में गिरावट के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित बिन्दु सामने आये।

1. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पादों का प्रचार प्रसार बहुतायत में होना।
2. सरकार की योजनाओं की ठीक ढंग से क्रियान्वयन न होना।
3. नोटबंदी व जी.एस.टी. जैसी नीतियों का नकारात्मक प्रभाव होना।

**शोध पत्र का अवलोकन**

1. सरकार द्वारा चलायी गयी योजना जैसे परफ्यूम पार्क प्रमुखता से लागू होना चाहिए।
2. सरकार को इत्र की राजधानी कन्नौज को इसके ऐतिहासिक विरासत होने की वजह से इस तरफ प्रमुखता से ध्यान देना चाहिए।
3. इत्र उद्योग में नये–नये प्रयोगों व तकनीकों को विकसित करना चाहिए।
4. देश व विदेशों में जैसे प्रयागराज में हुए कुम्भ की बाण्डिंग हुई, ठीक उसी प्रकार का इत्र के उद्योगों के लिए भी करना चाहिए।

**निष्कर्ष**

यह तो पूर्णतः स्पष्ट है कि इत्र उद्योग की कन्नौज में अपनी अलग पहचान रही है किन्तु नये तकनीकी युग में यह कहीं न कहीं पीछे होता जा रहा है। इसके लिए सरकार को जरुरी प्रयास पर बल देना होना होगा। इत्र प्रयासों में कुछ सुझाव निम्नलिखित है।

1. नयी तकनीकी विकसित करना व इत्र श्रमिकों को उचित प्रशिक्षण प्रदान करना जिससे वह भी प्रतिस्पर्धा में बराबर रुप से खड़े हो पाए।
2. प्रदेशीय व केन्द्रीय सरकार द्वारा कन्नौज को एक विशेष जिले के रुप में घोषित कर उसके लिए अलग से निधी की व्यवस्था करना।
3. वहाँ के पारम्परिक श्रमिकों के स्थिति में सुधार के लिए भी योजनाओं को लागू करना।

**अंत टिप्पणी**

1. *डॉ. किशन यादव, पंचायती राज में महिलाओ की रीव्यूड रेफ्रीड जर्नल, Vol.4, Issue 11, 2016 पेज 5–9 (Available at* www.shabhbrahm.com*)*
2. *Buch. M.B. (1983-88): "Fourth Survey of Research in Education", Vol. II.*
3. *Fah CYB, Foon YS, Osman S. An Exploratory Study of the Relationships between Advertising Appeals, Spending Tendency, Perceived Social Status and Materialism on Perfume Purchasing Behavior. International Journal of Business and Social Science 2011; (10): 1-7.*
4. *Ali RH, Nas Z, Anwar KJ. Factors Considered By Consumers for Purchase of Perfumes/ Fragrances: A Case Study of Consumers in the Twin Cities of Islamabad & Rawalpindi. Asian Journal of Management Sciences Jul 2013; 2(3): 2186-8441.*
5. *धर्मेन्द्र वर्मा, गजानन मिश्रा, "इत्र श्रमिकों की विभिन्न परिस्तिथियों की समीक्षा और अवलोकन", Srinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika, Vol. 3, Issue 11, February 2019.*
6. *धर्मेन्द वर्मा, गजानन मिश्रा, "कन्नौज में इत्र श्रमिकों की स्थिति का विश्लेषात्मक अध्ययन", International Journal of Innovative Knowledge Concepts, ISSN 2454-2415, Vol. 7, Issue 4, April 2019.*
7. *Hamid A. R., Zekeriya N., Khalid J. A.; 2013. "Factors considered by consumers for purchase of perfumes/fragrances: A case study of consumers in the twin cities of Islamabad & Rawalpindi", Asian Journal of Management Sciences and Education; vol. 2, No.3 pp 189-204.*